

## VI. मूल्य स्थिति

डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में अगस्त 2008 में 12.9 प्रतिशत के सर्वोच्च स्तर से गिरावट होना आर्थिक वृद्धि में नरमी होने के साथ-साथ हुआ, जिससे एक समर्थनकारी वृद्धि पोषक मौद्रिक नीति दृष्टिकोण को अंगीकृत करने की गुंजाइश हुई, जो वर्ष 2009-10 में अब तक जारी रहा है। उभरता हुआ स्फीतिकारक दबाव डब्ल्यूपीआइ में इसके अंत-मार्च स्तर से 5.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी तथा उच्च एवं अपरिवर्ती सीपीआइ मुद्रास्फीति के संदर्भ में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बदलता हुआ मुद्रास्फीति वातावरण आवश्यक वस्तुओं, खास कर आम उपभोग की वस्तुओं, जैसेकि सब्जियाँ, दालें और चीनी की कीमतों में उच्च क्रम में बढ़ोतरी होने से प्रेरित था। खाद्य-कीमत मुद्रास्फीति की प्रमुखता इस तथ्य से स्पष्ट है कि डब्ल्यूपीआइ में मुद्रास्फीति (वाइ-ओ-वाइ), खाद्य कोटि को छोड़ कर, महत्वपूर्ण रूप से कम अर्थात् (-)3.4 प्रतिशत रही है, जबकि हेडलाइन मुद्रास्फीति 16 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार 1.2 प्रतिशत थी। उभरती मुद्रास्फीति के स्रोत के स्वरूप को देखते हुए वितरण के लिए आपूर्ति स्थिति और आपूर्ति शृंखला, दोनों में सुधार के संबंध में नीतिगत जोर दिया जाना आवश्यक होगा।

VI.1 वैश्विक मुद्रास्फीति, जो वर्ष 2008-09 में वैश्विक संकट के आरंभ होने के साथ आरंभ हुई थी, में महत्वपूर्ण नरमी वर्ष 2009-10 में बनी रही, जिसमें अनेक उन्नत देशों में वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही में पण्य-कीमतों में तेज गिरावट होने के चलते ऋणात्मक मुद्रास्फीति और समग्र माँग में निरंतर मंदी देखी गयी। खाद्य पदार्थ, ईंधन और धातु की कीमतें दिसंबर 2008 में न्यूनतम स्तर पर पहुँच गयी थीं, और तब से उनमें थोड़ी-थोड़ी दृढ़ता आने लगी। तथापि, सुस्त वैश्विक माँग और उपयोग नहीं की गयी क्षमता की उपस्थिति ने मुद्रास्फीति की जोखिम को

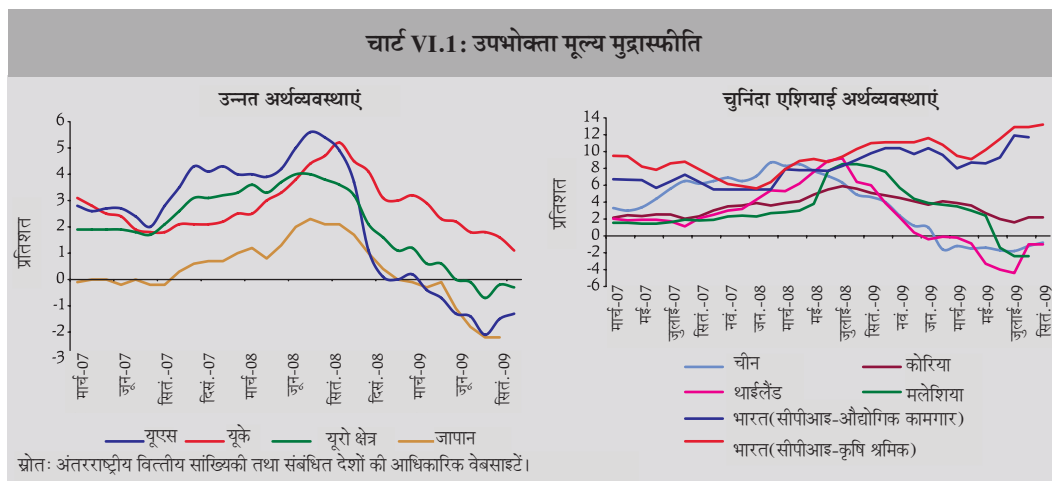
रोका, जिससे पूरी दुनिया में केंद्रीय बैंकों को आर्थिक वृद्धि तेज करने के लिए समर्थनकारी मौद्रिक नीति दृष्टिकोण जारी रखने में मदद मिली।

VI.2 भारत में मुद्रास्फीति, जैसा कि थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ) में वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ द्वारा मापा जाता है, जिसने वर्ष 2008-09 में वैश्विक मुद्रास्फीति का अनुसरण किया था, अगस्त 2008 के 12.9 प्रतिशत से तेजी से घट कर अंत-मार्च 2009 में 0.8 प्रतिशत रह गयी। उसके बाद इसमें क्रमिक रूप से नरमी आने के कारण जून 2009 से आरंभ करते हुए लगातार 13 सप्ताहों तक ऋणात्मक मुद्रास्फीति बनी रही और उसके बाद सितंबर 2009 के आरंभ से यह पुनः धनात्मक हो गयी। उभरता हुआ स्फीतिकारक दबाव चालू वित्तीय वर्ष के दौरान अंत-मार्च 2009 से डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में 5.9 प्रतिशत वृद्धि होने (10 अक्टूबर 2009 तक) और अगस्त/सितंबर 2009 में उच्च सीपीआइ मुद्रास्फीति के 11.7-13.2 प्रतिशत की सीमा में रहने से स्पष्ट प्रतीत होता है। दुर्बल माँग और आर्थिक कार्यकलाप के मंद होने को देखते हुए यह कुछ सीमित वस्तुओं, जिसकी अगुआई खाद्य पदार्थ करते हैं, की आपूर्ति में बाधा का होना वह कारण है, जिसने वर्तमान मुद्रास्फीति दबाव को बढ़ाया।

## वैश्विक मुद्रास्फीति

VI.3 वर्ष 2008-09 की पहली छमाही के दौरान मुद्रास्फीति का उच्च स्तर दर्ज करने के बाद प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में हेडलाइन मुद्रास्फीति में तेज गिरावट आयी और वह वर्ष 2009 में ऋणात्मक हो गयी। ओईसीडी देशों में वर्ष-दर-वर्ष उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति, जो जुलाई 2008 में 4.9 प्रतिशत के सर्वोच्च स्तर पर रहने के बाद जुलाई 2009 तक निरंतर कम होती रही थी, वह अगस्त 2009 में सीमांतिक रूप से बढ़ी, लेकिन वह (-)0.3 प्रतिशत पर ऋणात्मक बनी रही। ओईसीडी देशों में मुद्रास्फीति में हाल में आयी कमी ऊर्जा के लिए सीपीआइ में तीव्र गिरावट के कारण हुई थी। प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच हेडलाइन मुद्रास्फीति अमरीका, जापान और यूरो क्षेत्र में ऋणात्मक हो गयी है, जबकि यू.के. में मुद्रास्फीति स्थिर रूप से कम होती रही है (चार्ट VI.1)। कोर मुद्रास्फीति भी प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में कम हुई है। ओईसीडी देशों में मुद्रास्फीति, खाद्य पदार्थ और ऊर्जा को छोड़कर, सितंबर 2008 के 2.4 प्रतिशत से कम होकर अगस्त 2009 में 1.5 प्रतिशत हो गयी। उत्पादक मूल्य सूचकांक (पीपीआइ) मुद्रास्फीति उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं, दोनों में तेजी से कम हुई। यूरो

चार्ट VI.1: उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति



क्षेत्र में पीपीआइ मुद्रास्फीति, जो जुलाई 2008 में 9.9 प्रतिशत तक बढ़ गयी थी, वह वर्ष 2009 के दौरान स्थिर गति से कम हुई; 8.4 प्रतिशत की अधिकतम कमी जुलाई 2009 में दर्ज की गयी। गिरावट होने की दर अगस्त 2009 में (-)7.5 प्रतिशत के साथ कम थी, जिसमें यूरो क्षेत्र में विनिर्माण के सूचकांक में पिछले 14 महीनों में माह-दर-माह सबसे अधिक बढ़ोतरी दर्ज की गयी।

VI.4 भले ही अधिकांश उन्नत देशों में हेडलाइन मुद्रास्फीति में वर्ष 2008 के मध्य से काफी कमी आयी है, अमरीका, जापान और यूरो क्षेत्र में वर्ष 2009 की पहली छमाही में ऋणात्मक मुद्रास्फीति द्वारा सृजित संभावित अपस्फीतिकारक चक्र की निरंतरता के बारे में पूर्व में प्रकट की गयी चिंता में कुछ हद तक कमी आयी है, जो विनिर्माण के क्षेत्र में प्रतिक्षेप और इनवेंट्री चक्र में बदलाव के संदर्भ में नीति प्रेरित समुत्थान के संकेतों के कारण हुई है। जिन प्रमुख कारकों ने अवस्फीति की प्रक्रिया में योगदान किया है, उनमें शामिल हैं जुलाई 2008 के रिकार्ड स्तर से तेल की कीमतों का तेजी से नीचे गिरना, खाद्य-पदार्थों और धातु की कीमतों में बड़े अधोमुखी संशोधन, न्यूनतर परिवहन खर्च और उप-इष्टतम क्षमता उपयोग के कारण औद्योगिक उत्पादन में गिरावट। आइएमएफ के अनुसार (अक्टूबर 2009), वैश्विक मुद्रास्फीति के कम होने और अवस्फीति से असुरक्षित रहने की उम्मीद है। तथापि, स्फीतिकारक प्रत्याशाओं के सामान्यतः भली-भाँति काबू में रहने से निरंतर अपस्फीति की जोखिम के कम रहने का अनुमान होता है। दूसरी ओर, मुद्रास्फीति की जोखिम उभरती अर्थव्यवस्थाओं में अधिक हो सकती है, जहाँ उत्पादन अंतराल कम हो और समुत्थान में मजबूती हो। आइएमएफ के अनुमान के अनुसार उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति वर्ष 2009 में शून्य के निकट हो सकती है, जिसमें बाद वाले वर्ष में बढ़ोतरी होकर वह 1 प्रतिशत हो सकती है; उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति वर्ष 2009-10 के दौरान लगभग 5 प्रतिशत पर मँडराते रहने की उम्मीद है। चीन, कुछ आसियान अर्थव्यवस्थाएँ और

अधिकांश उभरती यूरोपीय अर्थव्यवस्थाएँ 5 प्रतिशत से कम मुद्रास्फीति का अनुभव कर सकती हैं।

VI.5 वित्तीय संकट के प्रतिकूल प्रभाव का शमन करना अधिकांश केंद्रीय बैंकों की मौद्रिक नीति संबंधी कार्रवाई का केन्द्रविंदु बना रहा। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं, यथा, अमरीका और जापान में, नीति-दरें, जो वर्ष 2008 में शून्य स्तर के निकट पहुँच गयी थीं, उनमें वर्ष 2009 के दौरान कोई परिवर्तन नहीं किया गया। नीति-दर कटौतियाँ अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं, जैसेकि यू.के., यूरो क्षेत्र और कनाडा में मार्च-मई 2009 के बीच लागू की गयी थीं, और बाद में उनमें कोई परिवर्तन नहीं किया गया। रिजर्व बैंक ऑफ आस्ट्रेलिया ने 8 अप्रैल 2008 को अपनी नीति दर में 25 आधार अंक की कटौती की थी, लेकिन उसे आर्थिक समुत्थान का संकेत मिलने और विश्वास उत्पन्न करने के उपायों में सुधार होने पर 7 अक्टूबर 2009 को प्रत्यावर्तित कर दिया (सारणी 6.1)। बैंक ऑफ इजराइल ने भी अपनी नीति दर को अप्रैल 2009 से 25 आधार अंक घटा दिया था, लेकिन उसे सितंबर 2009 से पुनः वापस 25 आधार अंक बढ़ा दिया।

VI.6 उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति जुलाई 2008 से महत्वपूर्ण रूप से नरम हुई, जो अंतरराष्ट्रीय पण्य कीमतों में गिरावट और वैश्विक वित्तीय संकट द्वारा उत्पन्न आर्थिक कार्यकलाप में मंदी के कारण था। प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच चीन और थाईलैंड में उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति वर्ष 2009 के प्रारंभ में ऋणात्मक हो गयी, जबकि मलेशिया में यह जून 2009 में ऋणात्मक हुई; अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में भी मूल्य-दबाव के काफी नरम होने का अनुभव किया गया। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में अधिकांश केंद्रीय बैंकों (चीन को छोड़कर) ने वृद्धि में गिरावट को रोकने और वैश्विक वित्तीय संकट के प्रसार-प्रभाव का मुकाबला करने के प्रयास में वर्ष 2009 में अपनी नीति दरों को घटा दिया। रूस, थाईलैंड, इंडोनेशिया और फिलीपीन्स ने वर्ष 2009 की जुलाई-सितंबर तिमाही में अपनी नीति दरों को घटाना जारी रखा।

सारणी 6.1: वैश्विक मुद्रास्फीति संकेतक

प्रतिशत						
देश/क्षेत्र	प्रमुख नीति दर	नीति दर (22 अक्टूबर 2009 को)	नीति दर में परिवर्तन (आधार अंक)		सीपीआइ मुद्रास्फीति (वर्ष-दर-वर्ष)	
			सितं. 08 - मार्च 09 के अंत से	मार्च 09 के अंत से	सितं. 2008	सितं. 2009
1	2	3	4	5	6	7
<b>विकसित अर्थव्यवस्थाएं</b>						
ऑस्ट्रेलिया	नकदी दर	3.25 (अक्तू.7, 2009)	(-) 400	0	4.5 ^	1.5 ^
कनाडा	ओवरनाइट दर	0.25 (अप्रै.21,2009)	(-) 250	(-) 25	3.4	-0.9
यूरो क्षेत्र	प्रमुख पुनर्वित्त परिचालनों पर ब्याज दर	1.00 (मई 13,2009)	(-) 275	(-) 50	3.6	-0.3
जापान	असंपाशर्वीकृत ओवरनाइट मांग दर	0.10 (दिसं.19,2008)	(-) 40	0	2.1 *	-2.2 *
यूके	आधिकारिक बैंक दर	0.50 (मार्च. 5,2009)	(-) 450	0	5.2	1.1
यूएस	फेडरल फंड दर	0.00 से 0.25 (दिसं.16,2008)	(-) 200	0	4.9	-1.3
<b>विकासशील अर्थव्यवस्थाएं</b>						
ब्राजील	सेलिक दर	8.75 (जुला. 22, 2009)	(-) 250	(-) 250	6.3	4.3
भारत	रिवर्स रिपो दर	3.25 (अप्रै. 21, 2009)	(-) 250	(-) 25	9.0 *	11.7 *
	रिपो दर	4.75 (अप्रै. 21, 2009)	(-) 400	(-) 25		
चीन	बेचमार्क 1 वर्षीय उधार दर	5.31 (दिसं. 23, 2008)	(-) 216	0	4.6	-0.8
			(-400)	0		
इंडोनेशिया	बीआइ दर	6.50 (अग. 5, 2009)	(-) 150	(-) 125	12.2	2.8
इजराइल	प्रमुख दर(की रेट)	0.75 (सितं. 1, 2009)	(-) 350	0	5.5	2.8
कोरिया	आधार दर	2.00 (फर. 12, 2009)	(-) 325	0	5.1	2.2
फिलीपीन्स	रिवर्स रिपो दर	4.00 (जुला. 9, 2009)	(-) 125	(-) 75	11.9	0.7
रूस	पुनर्वित्त दर	10.00 (सितं. 30, 2009)	200	(-) 300	15.1	10.7
दक्षिण अफ्रीका	रिपो दर	7.00 (अग.14, 2009)	(-) 250	(-) 250	13.7 *	6.4 *
थाईलैंड	1-दिवसीय पुनर्खरीद दर	1.25 (अप्रै. 8, 2009)	(-) 225	(-) 25	6.0	-1.0
^ : ति2. *: अगस्त						
<b>टिप्पणी :</b> 1. सेंट्रल बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया और इजराइल ने अपनी नीति दरों में अप्रैल 2009 से 25 आधार अंकों की कमी की परंतु क्रमशः अक्टूबर 2009 तथा सितंबर 2009 से पुनः 25 आधार अंकों की बढ़ोतरी की।						
2. भारत के मुद्रास्फीति के आंकड़े औद्योगिक कामगारों के सीपीआइ के हैं।						
3. स्तंभ (3) के कोष्ठकों के आंकड़े वे तारीखें हैं जब पिछली बार नीति दरों में संशोधन किया गया था।						
4. स्तंभ (4) के कोष्ठकों के आंकड़े अवधि के दौरान आरक्षित नकदी निधि अनुपात में घट-बढ़ दर्शाते हैं।						
<b>स्रोत :</b> अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, संबंधित केंद्रीय बैंकों की वेबसाइटों और दि इकॉनॉमिस्ट।						

**वैश्विक पण्य कीमतें**

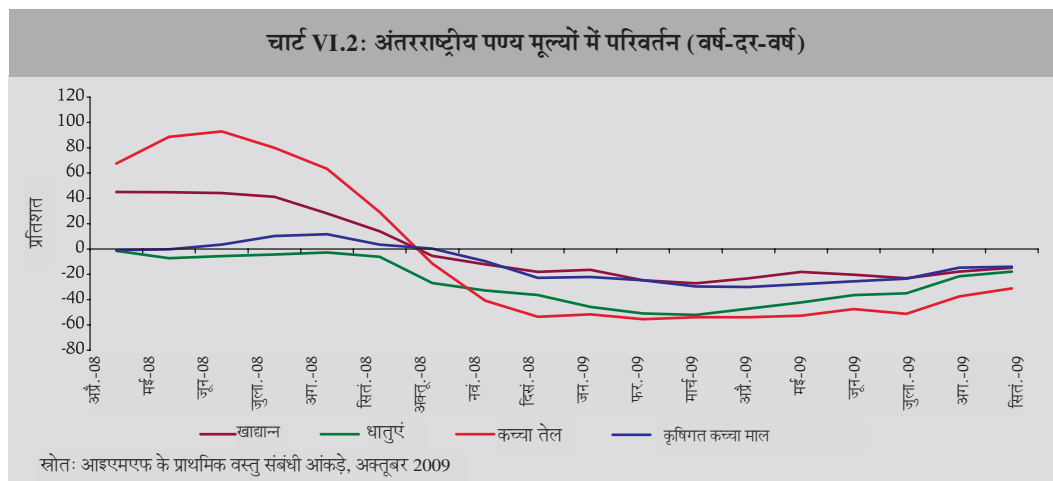
VI.7 अंतरराष्ट्रीय पण्य कीमतों में जुलाई से दिसंबर 2008 की अवधि के दौरान तेजी से गिरावट होने के बाद वर्ष 2009 में सितंबर 2009 तक बढ़ोतरी देखी गयी, जो कच्चे तेल और धातु की कीमतों के कारण थी। तथापि, खाद्यान्नों, यथा, चावल, गेहूँ और मक्का की कीमतों में गिरावट वर्ष-दर-वर्ष और अंत-मार्च 2009 दोनों की तुलना

में हुई (सारणी 6.2)। तथापि, अधिकांश पण्य कीमतें वर्ष 2008 के पूर्वार्ध में दर्ज किये गये अत्युच्च स्तर के काफ़ी नीचे बनी रहीं, जिसने ऋणात्मक वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तनों में योगदान किया (चार्ट VI.2)। वैश्विक आर्थिक समुत्थान की प्रत्याशा और प्रमुख कृषि उत्पाद, यथा, चीनी और चाय की दुर्बल आपूर्ति हाल में अंतरराष्ट्रीय पण्य कीमतों की बढ़ोतरी में प्रेरक रहे हैं।

सारणी 6.2: अंतरराष्ट्रीय पण्य मूल्य															
पण्य	इकाई	बाजार मूल्य (2004)	सूचकांक (2004=100)										घट-बढ (प्रतिशत)		
			2006	2007	2008	2009								सित्त-08 की तुलना में सित्त-09	मार्च-09 की तुलना में सित्त-09
						मार्च	अप्ल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सित्त.			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
<b>ऊर्जा</b>															
कोयला	\$/एमटी	53	93	124	240	115	120	122	135	139	137	128	-54.9	10.9	
कच्चा तेल (औसत)	\$/बीबीएल	38	170	188	257	124	133	154	183	171	190	181	-31.4	46.5	
<b>ईंधनेतर पण्य</b>															
पाम तेल	\$/एमटी	471	101	165	201	127	149	170	154	136	153	143	-12.6	12.7	
सोयाबीन तेल	\$/एमटी	616	97	143	204	118	130	145	145	136	144	137	-31.0	16.4	
सोयाबीन	\$/एमटी	307	88	125	171	124	135	152	164	151	154	140	-15.5	13.5	
चावल	\$/एमटी	238	128	137	274	247	231	224	242	241	221	218	-24.1	-11.8	
गेहूँ	\$/एमटी	157	122	163	208	147	149	167	164	143	134	121	-35.6	-17.6	
मक्का	\$/एमटी	112	109	146	200	147	151	161	161	136	136	135	-35.7	-8.6	
चीनी	सी/कि.ग्रा.	16	206	141	178	187	190	224	229	257	313	322	70.4	72.1	
कपास ए इंडेक्स	सी/कि.ग्रा.	137	93	102	115	83	92	100	99	105	104	103	-13.0	24.4	
अल्यूमीनियम	\$/एमटी	1716	150	154	150	78	83	85	92	97	113	107	-27.4	37.3	
तांबा	\$/एमटी	2866	235	248	243	131	154	159	175	182	215	216	-11.4	65.2	
सोना	\$/टोओजेड	409	148	170	213	226	218	227	231	228	232	244	20.1	7.9	
चांदी	\$/टोओजेड	669	173	200	224	196	187	211	219	200	216	246	35.2	25.7	
स्टील कोल्ड-रोल्ड कॉइलशीट	\$/एमटी	607	114	107	159	148	115	115	115	115	115	115	-36.4	-22.2	
स्टील हॉट-रोल्ड कॉइलशीट	\$/एमटी	503	119	109	176	159	119	119	119	119	119	119	-40.0	-25.0	
टिन	सी/कि.ग्रा.	851	103	171	217	125	138	162	176	165	175	175	-19.1	39.3	
जस्ता	सी/कि.ग्रा.	105	313	309	179	116	132	142	149	151	174	180	8.6	54.8	

\$: अमरीकी डॉलर    सी : अमरीकी सेंट    बीबीएल : बैरल    एमटी : मैट्रिक टन    कि.ग्रा.: किलोग्राम    टोओजेड : ट्रॉय औंस  
 टिप्पणी: संबंधित अवधि के दौरान मूल्य प्रवृत्ति को बेहतर रूप से दर्शाने के लिए वर्ष 2004 को आधार वर्ष के रूप में लिया गया है।  
 स्रोत : विश्व बैंक।

VI.8 वर्ष 2008 में अंतर्वर्ष उच्चतम अस्थिरता का प्रदर्शन करने के बाद अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में मार्च 2009 से धीरे-धीरे मजबूती आयी है, जो प्रत्याशित वैश्विक आर्थिक समुत्थान और तेल उत्पादक तथा निर्यातक देशों



(ओपेक) द्वारा कीमतों का समर्थन करने के लिए उत्तरोत्तर उत्पादन कटौती के प्रत्युत्तर में हुई है। कच्चे तेल की कीमतों ने जून 2009 में और पुनः अगस्त 2009 में 70 अमरीकी डॉलर प्रति बैरल के स्तर को भंग कर दिया। जबकि कच्चे तेल की कीमतों में सितंबर 2009 में सीमांतिक रूप से कमी आयी, उनमें अक्टूबर 2009 में मजबूती आना शुरू हुआ और वह 21 अक्टूबर 2009 को 80 अमरीकी डॉलर प्रति बैरल के स्तर को पार कर गयी, जिसके कारण थे अमरीकी डॉलर का कमजोर होना और चीन में निरंतर आर्थिक वृद्धि के चलते विश्व में तेल की खपत में समुत्थान की प्रत्याशा तथा अन्य एशियाई देशों में बदलाव के संकेत। यूएस इनर्जी इन्फॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार उच्च तेल इन्वेन्ट्रियों की मौजूदगी और ओपेक तथा गैर ओपेक, दोनों के सदस्यों द्वारा वर्ष 2009 की दूसरी छमाही के दौरान आपूर्ति बढ़ाये जाने की प्रत्याशा तेल कीमतों में निरंतर बढ़ोतरी को रोक सकती है।

VI.9 धातु की कीमतें, जिनमें वर्ष 2008 की दूसरी तिमाही से गिरावट की प्रवृत्ति देखी गयी थी, जिसका कारण प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में प्रचलित मंदी की स्थिति थी, उनमें मार्च 2009 में सबसे तेज गिरावट दर्ज की गयी; कीमतों में अप्रैल 2009 से प्रतिक्षेप हुआ है, जिसकी अगुआई ताँबा, सीसा और निकल ने की। वैश्विक आर्थिक भविष्य में सुधार होने का प्रभाव चक्रीय रूप से संवेदनशील मूल धातुओं की कीमतों पर हुआ है। कीमतों में सुदीर्घ गिरावट के प्रत्युत्तर में आपूर्ति में कटौती का प्रभाव कतिपय प्रमुख धातुओं, यथा, अल्यूमीनियम, टिन, जस्ता, की कीमतों पर पड़ा है। चीन से इन्वेन्ट्रियाँ बनाने और घरेलू औद्योगिक पुनरुत्थान की माँग ने धातु की कीमतों में प्रतिक्षेप को प्रोत्साहित किया है।

VI.10 आपूर्ति में सुधार, खास कर खाद्यान्नों और तिलहनों में, और वित्तीय बाजार के प्रतिभागियों द्वारा पण्य निवेश में की गई कमी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खाद्य पदार्थ की कीमतों पर दबाव को कम किया है, जो वर्ष 2008 में बढ़

गया था। तथापि, विविध प्रकार के पण्यों में कीमतों में भिन्नता दिखाई पड़ी है, जिसका कारण पण्य-विशिष्ट कारक हैं, जैसेकि मौसम की स्थिति और एकड़वार उपज। चीनी की अंतरराष्ट्रीय कीमत, जो वर्ष 2008 में ऊँचे स्तर पर रही थी, वर्ष 2009 में और बढ़ी। कीमत संबंधी दबाव में घटे हुए वैश्विक उत्पादन के कारण वृद्धि हुई और भारत, जो चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, को वर्ष 2009-10 में निवल आयातकर्ता बनना पड़ा, क्योंकि वर्ष 2008-09 में चीनी का इसका उत्पादन काफी कम हुआ था। भारत में प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में सूखा पड़ने और अन्य में बेमौसम वर्षा होने के कारण, जो क्रमशः गन्ना उत्पादन और गन्ने से चीनी बनाने की दर को प्रभावित कर सकते हैं, वर्ष 2009-10 के दौरान चीनी के उत्पादन में और अधिक गिरावट होने की संभावना है। ब्राजील में, जो चीनी का सबसे बड़ा उत्पादक है, नम मौसम स्थिति ने भी फसल को बाधित किया है, जिससे वैश्विक आपूर्ति और घटी है।

VI.11 कृषि-जन्य कच्चे माल में अधिक अस्थिरता रबर की कीमतों में परिवर्तन के कारण हुई, जो कच्चे तेल की कीमतों के अनुरूप चलती है। सुदृढ़ माँग और प्रतिकूल मौसम स्थिति के कारण आपूर्ति में हुए व्यवधान ने हाल के महीनों में रबर की कीमतों पर दबाव बनाया है। वैश्विक कपास कीमतें, जो मार्च 2009 में कमजोर माँग के चलते चार वर्षों के निम्न स्तर तक गिर गयी थीं, बाद के महीनों में, खास कर अक्टूबर 2009 में इस संभावना पर मजबूत हुई कि वस्त्र-निर्माताओं द्वारा खपत में वृद्धि किए जाने से माँग-आपूर्ति में असंतुलन होगा और उत्पादन में कमी आएगी। अंतरराष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति (आइसीएससी) को उम्मीद है कि विश्व में कपास का उत्पादन वर्ष 2009-10 में पिछले वर्ष से 1 प्रतिशत कम होगा।

### भारत में मुद्रास्फीति की स्थिति

VI.12 डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में 12.9 प्रतिशत के सर्वोच्च स्तर से अगस्त 2008 में तेजी से गिरावट होने

के कारण रिजर्व बैंक के लिए पर्याप्त गुंजाइश हुई कि वह मध्य सितंबर 2008 से एक समर्थनकारी मौद्रिक नीति दृष्टिकोण को अंगीकृत करे, ताकि प्रणाली में चलनिधि की उपलब्धता के बारे में अनिश्चितता दूर हो और वृद्धि में नरमी को रोका जा सके।

VI.13 वर्ष 2009-10 के लिए रिजर्व बैंक का वार्षिक नीति वक्तव्य (एपीएस), जो वैश्विक माँग में गिरावट और उसके परिणामस्वरूप वैश्विक पण्य-कीमतों में कमी तथा डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति के गिरकर लगभग शून्य स्तर पर मार्च 2009 में पहुँचने की पृष्ठभूमि में तैयार

किया गया था, में मूल्य स्थिरता को सुनिश्चित करते हुए और स्फीतिकारक प्रत्याशाओं को थामते हुए आर्थिक वृद्धि के पुनरुत्थान की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। तदनुसार, नीति-दरों में मौद्रिक प्रेरक उपायों के भाग के रूप में पुनः 25 आधार अंकों की कमी की गई (सारणी 6.3)। एपीएस में डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति के अंत-मार्च 2010 तक लगभग 4.0 प्रतिशत रहने का अनुमान पण्य कीमतों में वैश्विक प्रवृत्ति और घरेलू माँग-आपूर्ति संतुलन को ध्यान में रख कर लगाया गया था।

सारणी 6.3 : भारत में प्रमुख नीति दरों में परिवर्तन

(प्रतिशत)					
निम्नलिखित से प्रभावी	रिवर्स रिपो दर	रिपो दर	आरक्षित नकदी निधि अनुपात	डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति	सीपीआइ (आइडब्ल्यू) मुद्रास्फीति
1	2	3	4	5	6
अप्रैल 14, 2007	6.00	7.75	6.25 (+0.25)	6.3	6.7
अप्रैल 28, 2007	6.00	7.75	6.50 (+0.25)	6.0	6.7
अगस्त 4, 2007	6.00	7.75	7.00 (+0.50)	4.4	7.3
नवंबर 10, 2007	6.00	7.75	7.50 (+0.50)	3.2	5.5
अप्रैल 26, 2008	6.00	7.75	7.75 (+0.25)	8.3	7.8
मई 10, 2008	6.00	7.75	8.00 (+0.25)	8.6	7.8
मई 24, 2008	6.00	7.75	8.25 (+0.25)	8.9	7.8
जून 12, 2008	6.00	8.00 (+0.25)	8.25	11.7	7.7
जून 25, 2008	6.00	8.50 (+0.50)	8.25	11.9	7.7
जुलाई 5, 2008	6.00	8.50	8.50 (+0.25)	12.2	8.3
जुलाई 19, 2008	6.00	8.50	8.75 (+0.25)	12.5	8.3
जुलाई 30, 2008	6.00	9.00 (+0.50)	8.75	12.5	8.3
अगस्त 30, 2008	6.00	9.00	9.00 (+0.25)	12.4	9.0
अक्तूबर 11, 2008	6.00	9.00	6.50 (-2.50)	11.3	10.4
अक्तूबर 20, 2008	6.00	8.00 (-1.00)	6.50	10.8	10.4
अक्तूबर 25, 2008	6.00	8.00	6.00 (-0.50)	10.7	10.4
नवंबर 3, 2008	6.00	7.50 (-0.50)	6.00	8.7	10.4
नवंबर 8, 2008	6.00	7.50	5.50 (-0.50)	8.7	10.4
दिसंबर 8, 2008	5.00 (-1.00)	6.50 (-1.00)	5.50	6.6	9.7
जनवरी 5, 2009	4.00 (-1.00)	5.50 (-1.00)	5.50	5.3	10.4
जनवरी 17, 2009	4.00	5.50	5.00 (-0.50)	4.9	10.4
मार्च 4, 2009	3.50 (-0.50)	5.00 (-0.50)	5.00	0.9	8.0
अप्रैल 21, 2009	3.25 (-0.25)	4.75 (-0.25)	5.00	1.6	8.7

**टिप्पणी:** 1. रिवर्स रिपो चलनिधि अवशोषण को और रिपो चलनिधि अंतर्वेशन को दर्शाता है।  
2. कोष्ठकों के आंकड़े नीति दरों में परिवर्तन दर्शाते हैं।

VI.14 वर्ष 2009-10 के लिए मौद्रिक नीति की पहली तिमाही समीक्षा (एफक्यूआर)(जुलाई 2009) में यह नोट किया गया कि जून 2009 में ऋणात्मक डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति आधार प्रभाव के कारण थी और वह माँग में संकुचन का संकेतक नहीं थी। इसमें यह भी देखा गया कि डब्ल्यूपीआइ में तेज गिरावट से स्फीतिकारक प्रत्याशाओं में समनुरूप गिरावट नहीं आयी थी। अतः एफक्यूआर में मुद्रास्फीति का अनुमान को बढ़ाकर से 5.0 प्रतिशत किया गया।

VI.15 डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति, जो जून 2009 के पहले सप्ताह तक ऋणात्मक हो गयी थी, वह लगातार 13 सप्ताहों तक उसी प्रकार बनी रही और उसके बाद सितंबर 2009 में शून्य पर पहुँच गयी। डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में अस्थिर पैटर्न के विपरीत सीपीआइ मुद्रास्फीति अगस्त/सितंबर 2009 के दौरान 11.7 प्रतिशत से 13.2 प्रतिशत की सीमा में ऊँची बनी रही है। डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ मुद्रास्फीति के बीच के इस अंतर को वार्षिक नीति वक्तव्य और पहली तिमाही समीक्षा में रेखांकित किया गया है। एफक्यूआर में बताया गया कि रिजर्व बैंक के लिए तत्काल चुनौती है प्रचुर चलनिधि देने की अल्पावधि बाध्यता और आगे स्फीतिकारक दबाव निर्मित होने की संभावना के बीच संतुलन का प्रबंध करना। स्फीतिकारक दबाव एफक्यूआर प्रस्तुत किये जाने के बाद से बढ़े हैं, जैसा कि डब्ल्यूपीआइ, सीपीआइ की हाल की प्रवृत्तियों से और मुद्रास्फीति की प्रत्याशाओं से स्पष्ट है।

#### *थोक मूल्य मुद्रास्फीति*

VI.16 भारत में डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में अगस्त 2008 से लगातार गिरावट आयी और यह अंत-मार्च 2009 तक लगभग शून्य के स्तर पर पहुँच गयी, जो पेट्रोलियम उत्पादों और बिजली के नियंत्रित मूल्यों में कटौती तथा मुक्त रूप से कीमत निर्धारित खनिज तेल की मदों, लोहा और इस्पात, तिलहन, खाद्य तेल, खली और कपास की कीमतों में गिरावट से प्रेरित थी। डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति

में हुई गिरावट का महत्वपूर्ण हिस्सा भी इस अवधि के दौरान आधार प्रभाव के कारण था।

VI.17 वर्ष-दर-वर्ष डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में वर्ष 2009-10 के दौरान और भी कमी आयी और वह 6 जून 2009 को ऋणात्मक हो गयी। 5 सितंबर 2009 को डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति धनात्मक हुई (10 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार 1.2 प्रतिशत) और तब से वह जून 2008 में पेट्रोलियम उत्पादों के नियंत्रित मूल्य में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी के सुदृढ़ आधार प्रभाव को क्रमशः समाप्त किये जाने के साथ शून्य से सीमांतिक रूप से ऊपर बनी हुई है। मुक्त रूप से कीमत निर्धारित उत्पादों, यथा, लोहा और इस्पात, अलौह धातुएँ, रसायन और खाद्य तेलों, में भी इस अवधि के दौरान वर्ष-दर-वर्ष गिरावट दर्ज की गयी।

VI.18 चालू वित्तीय वर्ष के दौरान 10 अक्टूबर 2009 तक थोक मूल्य सूचकांक में मार्च 2009 के स्तर से 5.9 प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है। डब्ल्यूपीआइ में हाल में हुई वृद्धि मुख्यतः इन कारणों से थी - पेट्रोल और डीजल की कीमतों में वृद्धि (2 जुलाई 2009 से), तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि की प्रवृत्ति के अनुरूप ईंधन समूह की उन वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि जो कीमत नियंत्रण से मुक्त है, तथा चीनी, सब्जियों तथा ओषधियों और दावाओं की बढ़ी हुई कीमतें। अधिकांश खाद्येतर वस्तुओं के मूल्यों में अंतरराष्ट्रीय पण्य मूल्यों के अनुरूप बदलाव हुआ।

VI.19 समग्र मुद्रास्फीति में प्रमुख समूहों के योगदान के संदर्भ में ईंधन समूह के योगदान में तेज गिरावट दर्ज की गयी और वह इस समय ऋणात्मक है (चार्ट VI.3)। विनिर्मित उत्पाद समूह का योगदान, जो जून-अगस्त 2009 के दौरान डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति के ऋणात्मक चरण के साथ-साथ ऋणात्मक हो गया था, बाद में ऊपर की ओर बढ़ा और सीमांतिक रूप से शून्य के ऊपर है। प्राथमिक वस्तु समूह का योगदान धनात्मक और सुदृढ़ बना हुआ है।



सारणी 6.4: प्रमुख पण्यों के मूल्य -  
वैश्विक बनाम देशी

मद	(प्रतिवर्ष)			
	वार्षिक मुद्रास्फीति		हाल की प्रवृत्तियाँ	
	वर्ष-दर-वर्ष (सितं. 2009)	भारत*	मार्च 2009 के अंत की तुलना में सितं. 2009	भारत*
	वैश्विक	भारत*	वैश्विक	भारत*
1	2	3	4	5
1. चावल	-24.1	17.2	-11.8	2.9
2. गेहूँ	-35.6	4.2	-17.6	3.0
3. दूध	-	8.7	-	5.8
4. कच्चा कपास	-13.0	-13.3	24.4	5.2
5. तिलहन	-15.5	2.0	13.5	6.5
6. लौह अयस्क	-28.2	-5.8	-28.2	-18.8
7. कोयला खनन	-54.9	-1.0	10.9	0.0
8. खनिज तेल	-31.4	-13.2	46.5	10.6
9. खाद्य तेल	-21.8	-7.2	14.5	-1.9
10. खली	4.4	0.0	23.5	0.0
11. चीनी	70.4	42.7	72.1	28.0
11. मूल भारी अकार्बनिक रसायन	-	-26.8	-	-4.2
12. मूल धातु, मिश्र धातु और उत्पाद#	-17.8	-12.7	39.7	1.7
13. लोहा तथा इस्पात	-37.8	-17.2	-17.5	3.4

\* : 26 सितंबर 2009 को, डब्ल्यूपीआइ पर आधारित।

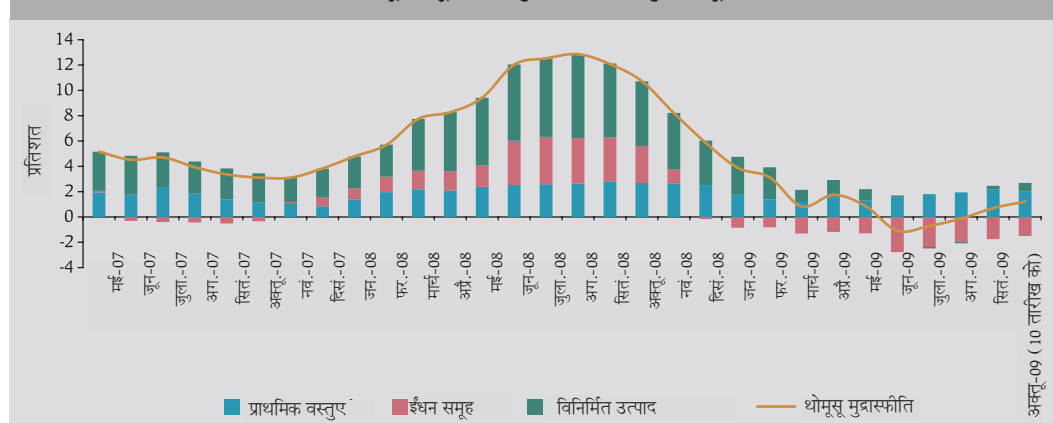
# : आइएमएफ के धातु मूल्य सूचकांक के अनुसार जिसमें, तांबा, अल्यूमीनियम, लौह अयस्क, टिन, निकेल, जिंक, शीशा और यूरेनियम शामिल हैं।

टिप्पणी: वैश्विक मूल्यों में वृद्धि विश्व बैंक और आइएमएफ के प्राथमिक पण्य मूल्यों के आंकड़ों पर आधारित है।

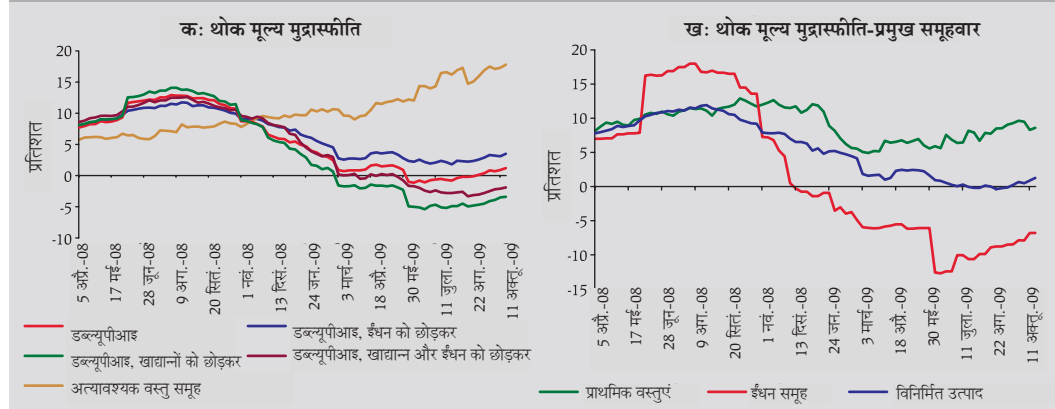
VI.20 भिन्न-भिन्न स्तर पर वाइ-ओ-वाइ डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति, ईंधन को छोड़कर, 10 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार 3.5 प्रतिशत पर न्यून थी, जबकि एक वर्ष पूर्व यह 10.4 प्रतिशत थी। इसका कारण था जून-अक्टूबर 2008 की अवधि के दौरान काफी अधिक डब्ल्यूपीआइ ईंधन समूह मुद्रास्फीति का होना। तथापि, डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति, खाद्य पदार्थों और ईंधन को छोड़ कर, 10 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार (-)1.9 प्रतिशत पर ऋणात्मक थी। वार्षिक औसत डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति की दर (52 सप्ताहों का औसत) भी अंत-मार्च 2009 के 8.3 प्रतिशत से घटकर 10 अक्टूबर 2009 को 2.5 प्रतिशत हो गयी। आवश्यक वस्तु समूह में 10 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार वर्ष-दर-वर्ष 17.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो मुख्यतः चीनी (45.1 प्रतिशत), दालों (22.8 प्रतिशत) और सब्जियों (19.6 प्रतिशत) की कीमतों द्वारा प्रेरित थे (चार्ट VI.4 क)।

VI.21 प्रमुख समूहों के बीच प्राथमिक वस्तु मुद्रास्फीति, वाइ-ओ-वाइ, 10 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार 8.6 प्रतिशत पर ऊँची थी, जबकि अंत-मार्च 2009 में यह 5.2 प्रतिशत थी, जो मुख्यतः खाद्य पदार्थों के कारण थी, जिनमें द्वि-अंकीय मुद्रास्फीति दर्ज की गयी (सारणी 6.5 और चार्ट VI.4 ख)। वर्ष 2008-09 के फसल मौसम

चार्ट VI.3: थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति में प्रमुख समूहों का योगदान



चार्ट VI.4: वार्षिक थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति



के दौरान अधिकांश कृषि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में तीव्र ऊर्ध्वमुखी संशोधन किया जाना भी अंशतः खाद्य पदार्थों की कीमत में बढ़ोतरी के लिए जिम्मेवार है, खास कर चावल और दालों के लिए (चार्ट VI.5)। चावल की कीमत में वृद्धि, वाइ-ओ-वाइ, मध्य अक्टूबर 2008 से दो अंकों में हुई है, बावजूद इस बात के कि फसल बहुत अच्छी हुई है और सरकारी स्टॉक में भी बढ़ोतरी हुई है। आपूर्ति में बाधा और एमएसपी बढ़ाये जाने से दालों की कीमतें प्रभावित हुईं। चाय की कीमतें, जिनमें वर्ष 2008-09 में तेज वृद्धि दर्ज की गयी थी, अप्रैल 2009 में कुछ कम हुईं, लेकिन पुनः मई 2009 से उनमें तेज वृद्धि दिखाई पड़ी, जिसका कारण विश्व में चाय का उत्पादन कम होने के बारे में पूर्वानुमान किया जाना था। भारतीय चाय बोर्ड द्वारा अगस्त 2009 तक चाय के अनुमानित उत्पादन में पिछले वर्ष के उत्पादन की तुलना में कमी दर्शायी गयी। फिर भी, कीमतों में बढ़ोतरी में जून 2009 से महत्वपूर्ण रूप से आयी गिरावट मुख्यतः आधार प्रभाव के कारण हुई।

VI.22 खाद्येतर वस्तुओं में, कपास में वाइ-ओ-वाइ मुद्रास्फीति अंत-मई 2009 से स्थिर गति से कम होती गयी, हालाँकि हाल के सप्ताहों में गिरावट में कुछ नरमी देखी गयी है। कपास उगाने के एकड़वार क्षेत्रफल में चालू

वर्ष में अब तक हुई बढ़ोतरी के चलते कपास का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में अधिक होने का अनुमान है। तिलहन की कीमतें, जो जून 2009 से कम हुई थीं, सितंबर 2009 से सीमांतिक रूप से बढ़ी हैं और इनका उत्पादन विलंबित और अपूर्ण मानसून के कारण कम हो सकता है।

VI.23 वर्ष-दर-वर्ष ईंधन समूह मुद्रास्फीति, जो अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों के अनुसार दिसंबर 2008 में ऋणात्मक हो गयी थी, उसमें चालू वित्तीय वर्ष में गिरावट जारी रही, जिससे समग्र डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति नीचे खिसक गयी। अंत-जून 2009 तक कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में बढ़ोतरी होकर उसके प्रति बैरल लगभग 70 अमरीकी डॉलर पर पहुँच जाने और स्वतंत्र रूप से कीमत-निर्धारित उत्पादों में तदनुसूची बढ़ोतरी होने के बावजूद ईंधन समूह में अवस्फीति जून 2009 में द्वि-अंकीय स्तर पर पहुँच गयी, जिसकी तुलना जून 2008 में नियंत्रित कीमतों में ऊर्ध्वमुखी संशोधन के आधारभूत प्रभाव के साथ की गयी। सरकार द्वारा 2 जुलाई 2009 से पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा के साथ, ताकि तेल कंपनियों की कम वसूलियों का, जो अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी के चलते हुई थी, आंशिक समंजन हो सके, ईंधन कीमत अवस्फीति नरम हुई।

सारणी 6.5: भारत में थोक मूल्य मुद्रास्फीति  
(वर्ष-दर-वर्ष)

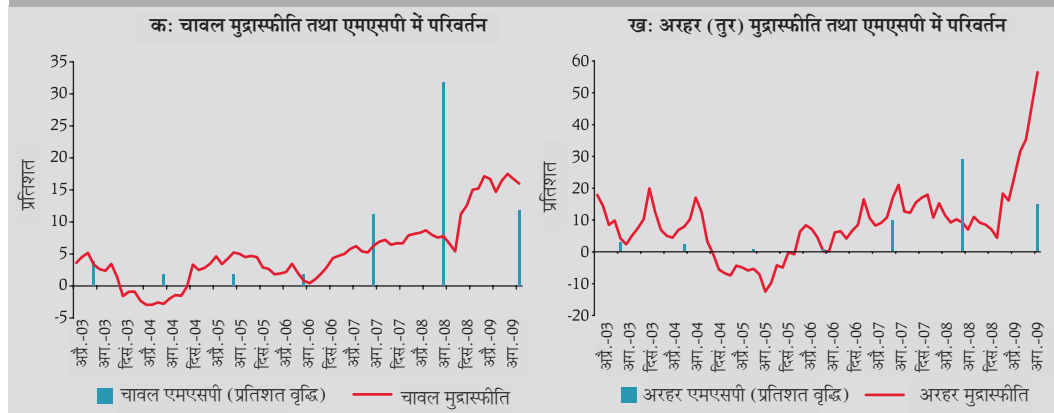
(प्रतिशत)									
पण्य 2008-09	भार	2008-09 (अक्टूबर 11)		2009-10 (मार्च 28)		वित्तीय वर्ष (अक्टूबर 10) अ.		(मार्च 09 की तुलना में) अ.	
		मुद्रास्फीति	मु.अं.	मुद्रास्फीति	मु.अं.	मुद्रास्फीति	मु.अं.	मुद्रास्फीति	मु.अं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
<b>सभी पण्य</b>	<b>100.0</b>	<b>11.3</b>	<b>11.3</b>	<b>0.8</b>	<b>0.8</b>	<b>1.2</b>	<b>1.2</b>	<b>5.9</b>	<b>5.9</b>
<b>1. प्राथमिक वस्तुएं</b>	<b>22.0</b>	<b>12.6</b>	<b>2.9</b>	<b>5.2</b>	<b>1.2</b>	<b>8.6</b>	<b>2.0</b>	<b>9.8</b>	<b>2.4</b>
खाद्य वस्तुएं	15.4	10.2	1.6	7.0	1.1	13.3	2.1	14.1	2.3
i. चावल	2.4	12.4	0.3	14.9	0.3	12.7	0.3	5.9	0.1
ii. गेहूं	1.4	5.0	0.1	4.5	0.1	6.7	0.1	3.5	0.1
iii. दालें	0.6	8.6	0.1	9.4	0.1	22.8	0.2	19.2	0.1
iv. सब्जियाँ	1.5	11.1	0.2	-5.2	-0.1	19.6	0.3	59.3	0.7
v. फल	1.5	16.2	0.3	5.9	0.1	3.2	0.1	5.2	0.1
vi. दूध	4.4	7.9	0.3	7.0	0.3	10.0	0.4	7.0	0.3
vii. अंडे, मछली और मांस	2.2	7.6	0.2	3.2	0.1	24.1	0.6	25.3	0.6
खाद्योत्तर वस्तुएं	6.1	14.1	0.8	0.1	0.0	-1.2	-0.1	3.6	0.2
i. अपरिष्कृत कपास	1.4	32.5	0.4	2.5	0.0	-11.2	-0.1	3.2	0.0
ii. तिलहन	2.7	15.2	0.4	-1.6	0.0	0.8	0.0	3.4	0.1
iii. गन्ना	1.3	-0.4	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
खनिज	0.5	43.6	0.4	7.2	0.1	-3.8	0.0	-13.1	-0.2
<b>2. ईंधन, ऊर्जा, बिजली और लुब्रिकेंट्स</b>	<b>14.2</b>	<b>14.5</b>	<b>3.1</b>	<b>-6.1</b>	<b>-1.3</b>	<b>-6.8</b>	<b>-1.5</b>	<b>7.6</b>	<b>1.5</b>
i. कोयला खनन	1.8	9.8	0.2	-1.0	0.0	-1.0	0.0	0.0	0.0
ii. खनिज तेल	7.0	22.4	2.8	-8.7	-1.1	-11.6	-1.6	10.5	1.2
iii. बिजली	5.5	1.4	0.1	-2.6	-0.2	2.0	0.1	4.7	0.3
<b>3. विनिर्मित उत्पाद</b>	<b>63.8</b>	<b>9.5</b>	<b>5.3</b>	<b>1.7</b>	<b>1.0</b>	<b>1.3</b>	<b>0.7</b>	<b>3.7</b>	<b>2.1</b>
i. खाद्य उत्पाद	11.5	8.8	0.9	8.8	0.9	16.1	1.6	8.0	0.9
जिनमें से: चीनी	3.6	13.9	0.3	18.4	0.4	45.1	1.1	31.0	0.9
खाद्य तेल	2.8	8.9	0.2	-7.6	-0.2	-7.2	-0.2	-3.9	-0.1
ii. सूती वस्त्र	4.2	6.3	0.2	16.2	0.4	6.5	0.2	3.3	0.1
iii. मानव निर्मित रेशे	4.4	3.5	0.1	-1.5	0.0	-4.7	-0.1	0.8	0.0
iv. रसायन और रासायनिक उत्पाद	11.9	9.7	1.1	2.0	0.2	2.1	0.2	6.6	0.7
जिनमें से: उर्वरक	3.7	9.1	0.3	4.8	0.1	-2.9	-0.1	-2.4	-0.1
v. गैर धातु खनिज उत्पाद	2.5	3.6	0.1	1.9	0.0	3.0	0.1	2.7	0.1
जिनमें से: सीमेंट	1.7	2.3	0.0	2.2	0.0	0.3	0.0	-0.1	0.0
vi. मूल धातुएं, संमिश्र धातु और धातु उत्पाद	8.3	19.7	1.9	-12.2	-1.3	-13.2	-1.4	0.4	0.0
जिनमें से लोहा और इस्पात	3.6	28.4	1.3	-18.4	-1.0	-18.4	-1.0	1.0	0.0
vii. मशीनरी और मशीन औजार	8.4	5.3	0.3	2.6	0.2	-1.5	-0.1	0.9	0.1
जिनमें से: इलेक्ट्रिकल मशीनरी	5.0	5.2	0.2	1.1	0.0	-2.8	-0.1	1.0	0.0
viii. परिवहन उपकरण और पुर्जे	4.3	7.0	0.2	3.1	0.1	-0.8	0.0	0.5	0.0
<i>जापन:</i>									
खाद्य मदे (संमिश्र)	26.9	9.6	2.5	7.7	2.0	14.4	3.7	11.6	3.2
डब्ल्यूपीआइ खाद्य वस्तुओं को छोड़कर	73.1	11.9	8.8	-1.6	-1.2	-3.4	-2.5	3.8	2.7
डब्ल्यूपीआइ ईंधन को छोड़कर	85.8	10.4	8.2	2.7	2.1	3.5	2.7	5.5	4.4
डब्ल्यूपीआइ आवश्यक वस्तु समूह	17.6	8.7	1.5	9.0	1.4	17.8	2.9	13.8	2.5

मु.अं. : मुद्रास्फीति में अंशदान

अ. : अर्न्तितम।

**टिप्पणी:** वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय की 19 अक्टूबर 2009, की प्रेस प्रकाशनी के अनुसार डब्ल्यूपीआइ की वर्तमान श्रृंखला (आधार 1993-94) मासिक आधार पर जारी की जाएगी न कि वर्तमान प्रथा के अनुसार साप्ताहिक आधार पर। तथापि, संवेदनशील वस्तुओं के मूल्यों पर साप्ताहिक आधार पर निगरानी रखने हेतु प्राथमिक वस्तुओं तथा 'ईंधन, ऊर्जा, बिजली, तथा लुब्रिकेंट' समूह की वस्तुओं के साप्ताहिक मूल्य सूचकांक का संकलन किया जाएगा।

चार्ट VI. 5: थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी)



VI.24 विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति, वर्ष-दर-वर्ष, भी मार्च 2009 से कम हुई है, जो आधार प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है और वह जुलाई 2009 में ऋणात्मक हो गयी। तथापि, यह 12 सितंबर 2009 को प्रत्यावर्तित हो गयी और तब से सीमांतिक रूप से धनात्मक बनी रही। विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति में उतार-चढ़ाव अधिकतर लोहा और इस्पात, खाद्य तेलों, उर्वरकों, मानव निर्मित फाइबर और मशीनरी एवं मशीन औजारों की कीमतों में वर्ष-दर-वर्ष गिरावट से प्रेरित था। विनिर्मित खाद्य-वस्तु मुद्रास्फीति मुख्यतः चीनी की कीमतों से प्रेरित थी, जो उसके भंडार के कम होने और कमजोर एवं छिटफुट मानसून के कारण बढ़ी थी। विनिर्मित खाद्य-वस्तु मुद्रास्फीति में योगदान करने वालों में डेयरी उत्पाद थे, जिनकी कीमतें हाल के कमजोर मानसून और पशुओं के चारे पर इसके प्रभाव के परिणामस्वरूप घटी हुई आपूर्ति से प्रभावित थी।

VI.25 'मूल धातु, एलॉय और उत्पाद', जो विनिर्मित उत्पादों का उप-समूह है, में 10 अक्टूबर 2009 को वाइ-ओ-वाइ ऋणात्मक मुद्रास्फीति दर्ज की गयी, जिसका मुख्य कारण था लोहा और इस्पात की कीमतों में गिरावट आना, जो वैश्विक कीमतों में कमी होने और शिथिल घरेलू और बाह्य माँग के कारण हो सकता है।

VI.26 प्राथमिक वस्तुओं की कीमतों में सूचकांक के अंत-मार्च 2009 के स्तर से 9.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सब्जियों की कीमतों में अंत-मार्च 2009 के स्तर से लगभग 59.3 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की गयी है। यह मुख्यतः आलू की कीमतों में, जो सब्जियों में दूसरा अत्युच्च भारत पण्य है, 100 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी के कारण हुई है, क्योंकि पिछले वर्ष आलू की कीमतें गिर जाने के बाद वर्तमान मौसम में उसके उत्पादन में कमी आयी है। दालों की कीमतें वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही के दौरान दो अंकों में चढ़ गयी हैं। यद्यपि चावल की कीमतों में अंत-मार्च 2009 में संयत बढ़ोतरी हुई, जो 3 अक्टूबर 2009 को 3 प्रतिशत से भी कम थी, धान की एकड़वार फसल क्षेत्र के कम होने के कारण वर्ष 2009-10 के दौरान उत्पादन में कमी होने की संभावना और धान उगाने वाले राज्यों में बाढ़ से हुए नुकसान से चावल की कीमत में 10 अक्टूबर 2009 की स्थिति के अनुसार लगभग 6 प्रतिशत की मजबूती आयी है।

VI.27 वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान (10 अक्टूबर 2009 तक) स्वतंत्र रूप से मूल्य-निर्धारित विविध पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में अंत-मार्च 2009 के उनके स्तर से बढ़ोतरी अंतरराष्ट्रीय कीमतों के अनुसार हुई है। जबकि फर्नेस ऑयल की कीमतों में बढ़ोतरी 55.7 प्रतिशत पर

सबसे अधिक थी, बिटुमेन की कीमतों में बढ़ोतरी 5.4 प्रतिशत पर सबसे कम थी। अन्य उत्पादों में कीमत-बढ़ोतरी एवियन टर्बाइन ईंधन में 39.9 प्रतिशत, लाइट डीजल ऑयल में 30.1 प्रतिशत, नाफ्था में 28.1 प्रतिशत और हाई स्पीड डीजल में 6.5 प्रतिशत हुई।

VI.28 वित्तीय वर्ष के लिए (10 अक्टूबर 2009 तक) विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति विनिर्मित खाद्य उत्पादों और ओषधियों एवं दवाइयों की कीमतों में वृद्धि से प्रेरित थी। न्यून अंतरराष्ट्रीय कीमत के कारण खाद्य तेल के आयात में तेज बढ़ोतरी ने खाद्य तेलों की कीमतों पर अधोमुखी प्रभाव डाला, जो अंत-मार्च के स्तर से कम हुई। ऑटोमोबाइल की बिक्री में पुनरुत्थान होने से और स्टॉक के घरेलू और अंतरराष्ट्रीय, दोनों बाजारों में खोले जाने से प्रमुख इस्पात कंपनियों ने वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान फ्लैट स्टील की अपनी कीमतें बढ़ा दी हैं। इसके परिणामस्वरूप लोहा और इस्पात के उप-समूह के भीतर स्टील शीट्स की कीमतों में अंत-मार्च 2009 के स्तर से सीमांतिक वृद्धि हुई है।

VI.29 समग्र दृष्टि से देखा जाये, तो डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में वर्ष-दर-वर्ष गिरावट ईंधन समूह में तेज गिरावट के कारण हुई है। जबकि प्राथमिक वस्तुओं की कीमतें ऊँची बनी हुई हैं, विनिर्मित उत्पादों में संयत कीमत-वृद्धि दर्ज की गयी है।

#### *उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति*

VI.30 उपभोक्ता मूल्य सूचकांकों (सीपीआइ) में वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ पर आधारित मुद्रास्फीति में जून 2008 से बढ़ोतरी हुई है, जिसका मुख्य कारण रहा है खाद्य पदार्थों, ईंधन और सेवाओं (जिसका प्रतिनिधित्व 'विविध समूह' करते हैं) की कीमतों में बढ़ोतरी होना। उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति के विविध माप अगस्त/सितंबर 2009 के दौरान 11.7-13.2 प्रतिशत की सीमा में ऊँचाई पर रहे, जबकि ये अगस्त/सितंबर 2008 में 8.0-9.7 प्रतिशत की सीमा में रहे थे (सारणी 6.6)।

VI.31 सीपीआइ मुद्रास्फीति हाल की अवधि में डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न रही है और इनके बीच अपसरण में भी बढ़ोतरी होती रही है (चार्ट VI.6)।

VI.32 डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ मुद्रास्फीति के बीच बड़े अपसरण का कारण खाद्य पदार्थों के उच्चतर भार को माना जा सकता है, जिनमें हाल के महीनों में उच्चतर मुद्रास्फीति देखी गयी है। जब खाद्य पदार्थों की कीमतों पर ऊर्ध्वमुखी दबाव होता है, तब सीपीआइ (आइडब्ल्यू) खाद्य पदार्थ मुद्रास्फीति सामान्यतः तेज दर पर बढ़ती प्रतीत होती है और वह डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति की तुलना में लंबी अवधि के लिए ऊँचे स्तर पर बनी रहती है। तथापि, सीपीआइ खाद्य पदार्थ मुद्रास्फीति में अगस्त 2009 में गिरावट दर्ज की गयी, जिससे यह डब्ल्यूपीआइ खाद्य पदार्थ मुद्रास्फीति के निकट आ गयी (चार्ट VI.7)। इन्हीं पण्यों में खुदरा स्तर पर ऊँची मुद्रास्फीति (जैसा कि सीपीआइ से पता चलता है) का कारण मध्यस्थता लागत, थोक और खुदरा बाजारों के बीच ऊँची परिवहन और श्रमिक लागत तथा थोक बाजार की तुलना में खुदरा बाजारों में कीमत-निर्धारण की बेहतर शक्ति का होना माना जा सकता है। इस प्रकार डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ मुद्रास्फीति के बीच अपसरण न केवल भार और व्याप्ति के कारण होता है, बल्कि एकसमान पण्यों की कीमतों में थोक और खुदरा स्तरों पर वास्तविक कीमत-अंतर के कारण भी होता है।

VI.33 डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ में सामान्येतर समूहों के बीच, सीपीआइ के अंतर्गत विविध समूह (जिनका भार 11.9 प्रतिशत से 24 प्रतिशत की सीमा में होता है), जिनमें सेवाएँ आती हैं, में भी काफी कीमत-दबाव देखा गया। इसी प्रकार, धातु समूह (भार 8.3 प्रतिशत), जिसे केवल डब्ल्यूपीआइ में दिखाया जाता

सारणी 6.6: उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति - प्रमुख समूह

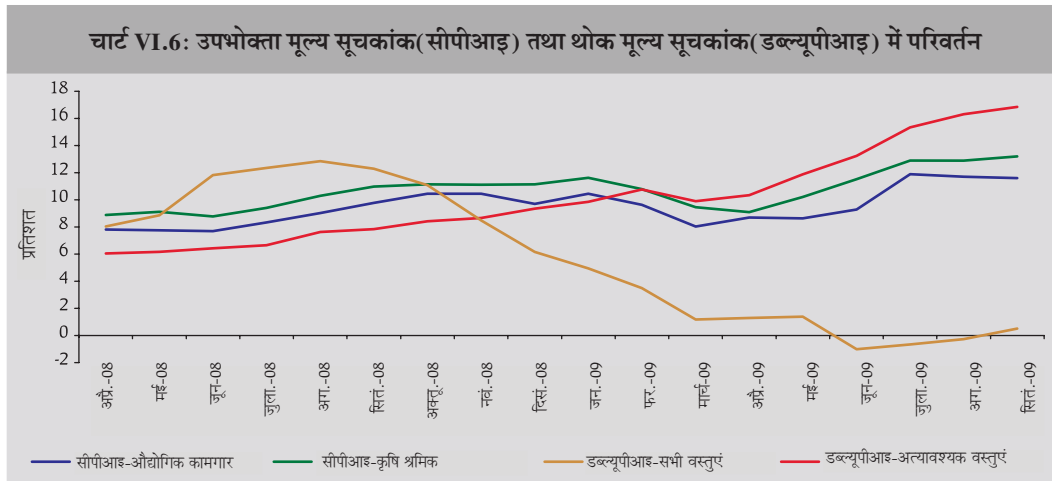
(प्रतिशत में वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़)													
सीपीआइ माप	भार	मार्च-07	मार्च-08	जुला-08	अग-08	सितं-08	मार्च-09	अप्रै-09	मई-09	जून-09	जुला-09	अग-09	सितं-09
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12		
<b>सीपीआइ - आइडब्ल्यू (आधार: 2001=100)</b>													
<b>सामान्य</b>	<b>100</b>	<b>6.7</b>	<b>7.9</b>	<b>8.3</b>	<b>9.0</b>	<b>9.8</b>	<b>8</b>	<b>8.7</b>	<b>8.6</b>	<b>9.3</b>	<b>11.9</b>	<b>11.7</b>	-
खाद्य समूह	46.2	12.2	9.3	10.3	11.7	13.1	10.6	10.4	11.7	12.2	14.7	13.7	-
पान, सुपारी आदि	2.3	4.4	10.9	6.3	6.3	7.8	8.3	6.7	7.5	8.1	8.9	9.6	-
ईंधन और बिजली	6.4	3.2	4.6	9.2	9.9	9.1	7.4	6.6	5.9	1.4	2.1	2.8	-
आवास	15.3	4.1	4.7	3.8	3.8	3.8	6	6	6	6	22.1	22.1	-
वस्त्र, विस्तर आदि	6.6	3.7	2.6	2.5	3.4	2.5	5	4.2	4.1	4.1	5.0	4.1	-
विविध	23.3	3.3	6.3	7.8	7.7	7.6	7.4	7.4	7.4	6.6	5.8	6.4	-
<b>सीपीआइ - यूएनएमई (आधार: 1984-85=100)</b>													
<b>सामान्य</b>	<b>100</b>	<b>7.6</b>	<b>6</b>	<b>7.4</b>	<b>8.5</b>	<b>9.5</b>	<b>9.3</b>	<b>8.8</b>	<b>9.7</b>	<b>9.6</b>	<b>13.0</b>	<b>12.9</b>	-
खाद्य समूह	47.1	10.9	7.8	10.0	11.5	13.2	12.2	11.1	12.9	13.6	15.3	15.0	-
ईंधन और बिजली	5.5	6.4	4.6	6.2	6.5	6.2	5.9	6.7	5.8	1.3	2.1	2.7	-
आवास	16.4	5.6	4	3.7	3.5	3.5	5.8	6	6	6.0	22.0	22.0	-
वस्त्र, विस्तर आदि	7	3.6	4.3	3.2	3.8	3.1	3.3	4.2	4.2	4.2	5.0	4.1	-
विविध	24	4.4	4.8	7.3	7.7	8.4	8.6	7.6	8.1	7.3	7.0	6.8	-
<b>सीपीआइ - एएल (आधार: 1986-87=100)</b>													
<b>सामान्य</b>	<b>100</b>	<b>9.5</b>	<b>7.9</b>	<b>9.4</b>	<b>10.3</b>	<b>11.0</b>	<b>9.5</b>	<b>9.1</b>	<b>10.2</b>	<b>11.5</b>	<b>12.9</b>	<b>12.9</b>	<b>13.2</b>
खाद्य समूह	69.2	11.8	8.5	10.7	11.3	12.0	9.7	9.1	11.2	12.4	14	14.1	14.6
पान, सुपारी आदि	3.8	5.7	10.4	10.8	11.8	12.8	15.3	14.5	14.4	14.2	15.6	16.5	15.5
ईंधन और बिजली	8.4	6.9	8	9.3	9.5	10.2	11.5	10.9	10.6	11.0	12.0	11.6	12.0
वस्त्र, विस्तर आदि	7	3.5	1.8	3.6	5.0	6.0	7.4	7.9	7.6	8.3	8.8	8.5	8.1
विविध	11.7	6.8	6.1	7.0	6.9	7.1	6.5	6.2	6.6	6.1	6.5	7.2	7.1
<b>सीपीआइ - आरएल (आधार: 1986-87=100)</b>													
<b>सामान्य</b>	<b>100</b>	<b>9.2</b>	<b>7.6</b>	<b>9.4</b>	<b>10.3</b>	<b>11.0</b>	<b>9.7</b>	<b>9.1</b>	<b>10.2</b>	<b>11.3</b>	<b>12.7</b>	<b>12.7</b>	<b>13.0</b>
खाद्य समूह	66.8	11.5	8.2	10.5	11.6	12.0	10	9.1	11.2	12.4	14.2	14.1	14.6
पान, सुपारी आदि	3.7	5.7	10.6	10.5	11.5	12.5	15	14	14.1	14.1	15.3	16.2	15.4
ईंधन और बिजली	7.9	6.9	8	9.3	9.8	10.5	11.5	10.9	10.6	11.0	11.8	11.4	12.0
वस्त्र, विस्तर आदि	9.8	3.1	2.8	4.3	5.6	6.5	8.2	8.4	8.3	8.8	9.7	9.1	9.5
विविध	11.9	6.3	6.2	7.0	7.2	7.4	6.7	6.2	6.4	6.2	6.1	7.0	6.9
<i>ज्ञापन:</i>													
डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति (अवधि के अंत में)		5.9	7.7	12.5	12.4	12.1	0.8	1.7	0.1	-1.1	-0.7	-0.1	0.7
जीडीपी अपस्फीतिकारी आधारित मुद्रास्फीति*		5.5	4.9	-	-	10.6	7.0	-	-	0.9	-	-	-

\*: मार्च के आंकड़े पूरे वर्ष के हैं।

आइडब्ल्यू: औद्योगिक कामगार यूएनएमई: शहरी गैर-श्रमिक कर्मचारी एएल: कृषि मजदूर आरएल: ग्रामीण श्रमिक

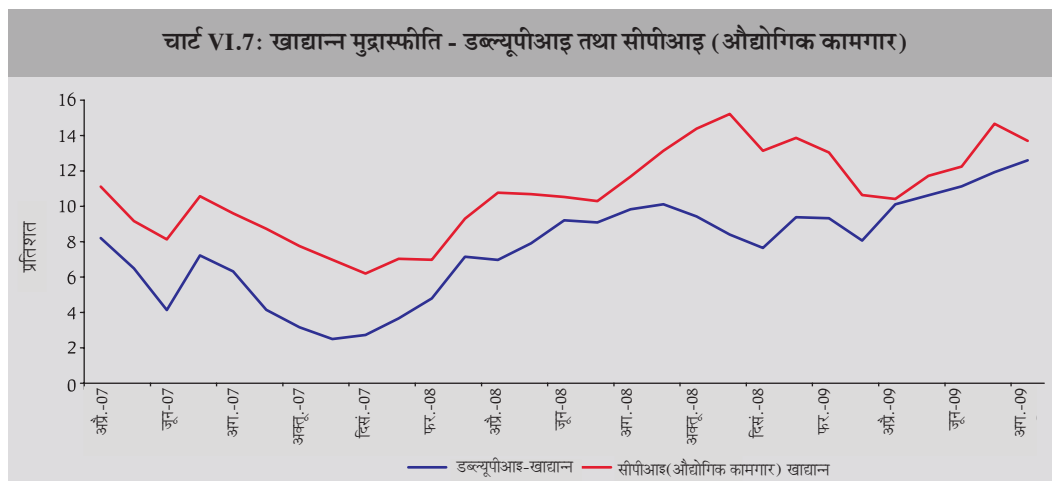
है, में महत्वपूर्ण ऋणात्मक मुद्रास्फीति प्रदर्शित हुई है, जिसने सीपीआइ और डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीतियों के बीच समग्र अंतर को बढ़ाने में योगदान किया है। डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति की तुलना में सीपीआइ मुद्रास्फीति के उतार-चढ़ाव में एक समय अंतराल भी विद्यमान रहता है।

VI.34 सीपीआइ (आइडब्ल्यू) मुद्रास्फीति की खाद्य पदार्थ कोटि के भीतर मुद्रास्फीति प्रमुख भोज्य पदार्थों के बीच दालों के उप समूह में और खराब होने वाले भोज्य पदार्थों के बीच सब्जियों के उप समूह में क्रमशः अप्रैल 2009 और मई 2009 से सबसे ऊँची रही है (चार्ट VI.8 क और ख)।

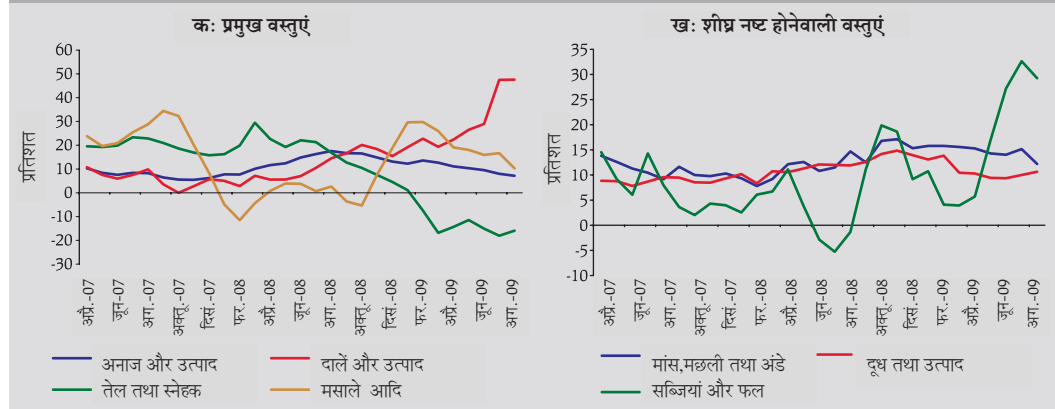


VI.35 आवास के लिए सीपीआइ-आइडब्ल्यू, जिसे सीपीआइ-एएल और सीपीआइ-आरएल में नहीं दिखाया जाता है, में जुलाई 2009 में 22.1 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि दिखाई पड़ी, जिसका कारण था किराया-मुक्त आवास के लिए प्रतिस्थापित किराये में संशोधन किया जाना, जो छोटे वेतन आयोग पंचाट के सीपीआइ मुद्रास्फीति पर होने वाले प्रभाव को प्रतिबिंबित करता है। यह उल्लेखनीय है कि सीपीआइ में आवास सूचकांक का संकलन प्रत्येक छह महीने में एक बार, उदाहरणार्थ, जनवरी और जुलाई में, किया जाता है। अतः यह सूचकांक आने वाले महीनों में ऊँचे स्तर पर बना रहेगा।

VI.36 समग्र दृष्टि से देखा जाये, तो उभरते कीमत-दबाव पहले से ही दृश्यमान हैं, भले ही वर्ष-दर-वर्ष डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति कम बनी रही है। एक वर्ष पहले ईंधन की कीमत में तेज बढ़ोतरी का आधार प्रभाव क्रमशः समाप्त होने से वर्ष-दर-वर्ष डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति 13 सप्ताहों के बाद ऋणात्मक क्षेत्र से बाहर निकल आयी है। डब्ल्यूपीआइ के भीतर आवश्यक वस्तु-समूह, खास कर खाद्य पदार्थों ने मुद्रास्फीति की बढ़ोतरी में सर्वाधिक योगदान किया। मुद्रास्फीति की गति को प्रतिबिंबित करते हुए डब्ल्यूपीआइ अंत-मार्च 2009 से ही कतिपय पण्यों की घरेलू आपूर्ति में बाधाएँ आने



चार्ट VI. 8: खाद्य वस्तुओं में सीपीआइ ( आइडब्ल्यू) मुद्रास्फीति



और अंतरराष्ट्रीय पण्य-कीमतों में बढ़ोतरी, दोनों के कारण बढ़ती रही है। उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति दृढ़ बनी हुई है और सीपीआइ तथा डब्ल्यूपीआइ के बीच अपसरण वर्ष 2009 की पहली छमाही के दौरान और भी विस्तृत हुआ है। उच्च सीपीआइ मुद्रास्फीति समावेशी वृद्धि के लिए बड़ी जोखिम होती है, क्योंकि यह आबादी के उस खंड की वास्तविक आय में संभावित क्षरण का कारण बन सकती है, जिनके लिए सीपीआइ सूचकांक तैयार किये जाते हैं। निरंतर ऊँची सीपीआइ मुद्रास्फीति के बने रहने से मजदूरी/लागत-वृद्धि मुद्रास्फीति भी आ सकती है, जिसका कारण होगा कीमत/मजदूरी में संशोधन के लिए और न्यूनम समर्थन मूल्य के लिए, जो सीपीआइ सूचकांकों से जुड़े होते हैं, दबाव का होना। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे स्फीतिकारक प्रत्याशाओं में और बढ़ोतरी हो सकती है। उभरते स्फीतिकारक दबावों के आपूर्ति पक्ष के स्रोतों को देखते हुए अधिक सुदक्ष वितरण के लिए आपूर्ति की स्थिति और आपूर्ति श्रृंखला, दोनों में सुधार के लिए नीति को दिशा-केंद्रित करना आवश्यक होगा।

मुद्रास्फीति पर आपूर्ति पक्ष के दबाव को नियंत्रित करने के लिए उपाय किये गये हैं। इनमें शामिल हैं अक्टूबर 2009-मार्च 2010 की अवधि के दौरान 30 लाख मैट्रिक टन गोहूँ खुला बाजार बिक्री के अंतर्गत जारी करना; गोहूँ का स्टॉक रखने की सीमा पर प्रतिबंध को हटाना, ताकि प्राइवेट व्यापारी फसल कटाई के मौसम में गोहूँ की खरीद कर सकें; चीनी के बड़े उपभोक्ताओं के लिए स्टॉक बनाये रखने पर प्रतिबंध; त्योहार के मौसम के पहले ही चीनी का कोटा जारी करने में बढ़ोतरी करना; चावल, गोहूँ और अपरिष्कृत चीनी पर आयात शुल्क हटाना; और नामोद्दिष्ट एजेंसियों के अतिरिक्त केंद्रीय/राज्य सरकार एजेंसियों तथा प्राइवेट व्यापारियों को 10 लाख मैट्रिक टन तक श्वेत/परिष्कृत चीनी के शुल्क-मुक्त आयात की अनुमति देना। उच्च सीपीआइ और आवश्यक वस्तु मुद्रास्फीति का बना रहना रिजर्व बैंक के उस उद्देश्य के लिए चुनौती होगा, जो मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं को थामने के लिए तय किया गया है।